राँची विश्वविद्यालय, राँची

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

मानविकी संकाय (हिन्दी विभाग)

वर्ष : 2024

''जयनंदन के उपन्यासः सामाजिक जीवन के विविध रंग''

शोध निर्देशक :

डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह

(सहायक प्रोफेसर)
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
(झारखण्ड)

शोधार्थी :

सालो कुमारी उराँव
यू०जी०सी० नेट
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय
राँची (झारखण्ड)

प्रस्तावना

प्रस्तावित शोध शीर्षक व्यापक एवं विस्तृत है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यास का बहुत बड़ा योगदान है। उपन्यास साहित्य में सृजन और आस्वादन का संतुलित योग देखने को मिलता है। समाज को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रबल माध्यम उपन्यास साहित्य है जो सीधा सम्बंध मानव समुदाय से रखता है। ''**जयनंदन के उपन्यासः सामाजिक जीवन के विविध रंग**'' की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। उनके उपन्यास में मानव जीवन के विविध वर्ग की पर्याप्त चर्चा की गई है।

हर काल को समझने के लिए हमें लेखन की आवश्यकता पड़ती है। उनके कलम हमें समाज की हर पहलू से रूबरू कराती है, उन्हें नजरअंदाज कर हम अपने समाज का नवनिर्माण नहीं कर सकते। हमारे समाज का यथार्थ चित्रण रचनाकारों की रचनाओं में देखने के लिए मिलती है, उनकी लेखनी के द्वारा हम अपने समाज के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों को जान पाते हैं। उपन्यास का केंद्र बिंदु हमेशा से मानव जीवन और मानव संबंध रहा है। मानव जीवन का आइना आंरभ से ही उपन्यास लेखन रहा है।

इसी दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में ''**जयनंदन के उपन्यास : सामाजिक जीवन के विविध रंग**'' इस शोध प्रबंध को निम्नलिखित आठ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय :

इस अध्याय में जयनंदन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। जब भी हम किसी साहित्यकार का नाम सुनते है तब हमारे हृदय में सबसे पहले यह प्रश्न उठता है कि उनके संस्कार, उनकी शिक्षा–दीक्षा, पारिवारिक वातावरण, उनका व्यवहार कैसा था? उन्होंने लिखना कब प्रारंभ किया? साहित्य के प्रति उनका रूझान कैसे बढ़ा? उनकी पहली कृति कौन सी

थी? उन्हें किस कृति से प्रसिद्धि मिली? उन्होंने अपने जीवन में कौन–कौन से विपरीत परिस्थितियों को देखा और उनका सामना उन्होंने कैसे किया। इस अध्याय के अंतर्गत जयनंदन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा।

द्वितीय अध्याय :

द्वितीय अध्याय में जयनंदन की वैचारिकी और सामाजिक चेतना पर विचार–विमर्श करेगें। कभी भी कोई उपन्यास पर विचार किया जाता है तो वहां के हर वर्ग को बारीकी से देखा जाता है। जयनंदन के उपन्यास में मजदूर वर्ग, अधिकारी वर्ग, रंगकर्मी वर्ग, समाज के विभिन्न वर्गों का अध्ययन किया जायेगा।

तृतीय अध्याय :

इस अध्याय में जयनंदन के उपन्यासों का कथावस्तु पर दृष्टि डालेगें। उनके उपन्यास जमींदारी प्रथा के साथ–साथ बदलती समाज को नई दिशा देने का कार्य करती है। यह समाज जमींदारों के जुल्मों से पीड़ित रहा है लेकिन जयनंदन के उपन्यास पर दृष्टि केंद्रित किया जाए तो हम देखेगें कि एक समाज ऐसा भी रहा जो जमींदारी प्रथा के जुल्मों को दरकिनार कर समाज उत्थान में अपनी भागीदारी निभाए। साथ ही चरित्रों के संघर्ष को जानेगें 'चाक से कॉलेज तक का सफर उन चरित्रों ने कैसे जिया।

चतुर्थ अध्याय :

उपयुक्त अध्याय में वस्तु क्षेत्र, वस्तु विन्यास, वस्तुः सम्प्रेष्य, चरित्र निर्माण पर विचार किया जाएगा, जयनंदन के उपन्यास में घटना को सजाना, चरित्रों का किस प्रकार से चुनाव किया गया, सभी पात्र एक दूसरे को इस प्रकार से बांधे रखते हैं कि पाठक उन्हें नजरअंदाज नहीं कर पाते। पाठक जब उपन्यास को पढ़ते है तब वो कहीं न कहीं अपने आपको भी देखते है जिससे उपन्यास पुनः जीवंत हो उठती है।

पंचम अध्याय :

इस अध्याय में जयनंदन के उपन्यास में संवाद योजना पर ध्यान केन्द्रित करेगें। उपन्यास हो या अन्य कोई विधा संवाद महत्वपूर्ण कड़ी होती है जो हो रही घटनाओं को आगे बढ़ाती है साथ ही पात्रों के नकारात्मकता और सकारात्मकता को बताने का सशक्त माध्यम है। संवाद– स्वाभाविकता, सरलता, पात्रानुकूलता, प्रभावक्षमता यथार्थ से परिपूर्ण होना चाहिए।

पष्ठम अध्याय :

उपयुक्त अध्याय में जयनंदन के उपन्यास और देशकाल का निर्माण पर विचार किया गया। उपन्यास किस समय लिखा गया उनके रीति रिवाज, उस समय की परिस्थिति पर दृष्टि डाला गया। जयनंदन के उपन्यास में इस्टेट का जिक्र किया है, जमींदारी प्रथा से जुड़ी क्रियाकलापों का अध्ययन किया जाएगा।

सप्तम् अध्याय :

उपयुक्त अध्याय में जयनंदन के उपन्यासों का उद्देश्य और दृष्टिकोण पर विचार किया गया। लेखक बिना उद्देश्य के लेखनी नहीं करते, अपनी बातों को वे चरित्रों के माध्यम से समाज को बताने का कार्य करते है। लेखनी तभी साकारात्मक मानी जाती है जब वो समाजोपयोगी सिद्ध हो। उनके उपन्यासों में सामाजिक उत्थान पर ध्यान केंद्रित किया गया, सभी पात्र महत्वपूर्ण हैं।

अष्ठम् अध्याय :

उपयुक्त अध्याय में जयनंदन के उपन्यासों की भाषा पर विचार करेगें। कुछ उपन्यास ऐसे हैं जो घटना प्रधान है और कुछ सामाजिक प्रधान, उनके उपन्यासों में हम हर जाति संघर्ष का परिचय प्राप्त करते है। कथानिर्माण, वस्तु चित्रण संवाद, देशकाल, उद्देश्य पर दृष्टि डालेगें।

परिचय :

20 वीं शदी उत्तरार्ध से 21 वीं शदी के हिन्दी साहित्य जगत में अपनी पहचान बनाने वाले बहुमुखी प्रतिभाशाली कथाकार जयनंदन जी अपनी कथा साहित्य के रचना संसार में हमारे समाज के तथा जीवन के विभिनन रंगों को उकेरने का कार्य किए हैं। अपनी ज्ञान कौशल तथा जीवन के घटनाओं से अनुभव प्राप्त कर उन्हें शब्द देने का कार्य किए हैं। उनके उपन्यासों में समाज के हर वर्ग को दर्शाया गया है, अधिकारी वर्ग, मजदूर वर्ग, रंगकर्मी वर्ग, ग्रामीण जीवन, शहरी जीवन, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिवेश से हमें अवगत कराने का प्रयास किए हैं।

26 फरवरी 1956 ई० को बिहार राज्य के नवादा जिले के अत्यंत सुन्दर गाँव मिलकी में इनका जन्म हुआ।

इनका जन्म संयुक्त परिवार में हुआ, एक भाई एक बहन–कमला देवी, पिता–लालेश्वर प्रसाद और माता–मनका देवी, माता–पिता का देहांत हो गया है।

विवाह

19 वर्ष की उम्र में इनका विवाह मनका देवी के साथ हुआ, अकसर बीमार होने के कारण इनकी माता जी को घर के कार्यो में परेशानी होती थी। जब जयनंदन जी का विवाह हुआ तब उनकी पत्नी अशिक्षित, पत्नी धर्म से अनभिज्ञ, अशिष्ट एवं संस्कार से परे थी। जिसकारण शुरूआती दिनों में थोड़ी परेशानी हुई, जीवन में सुख–दुख आते जाते रहते हैं। जीवन में कठिनाइयों का सामना करते हुए वो एक अच्छे पति का धर्म निभाते रहे हैं।

इनके चार बच्चे हुए, जिनमें से बड़ी बेटी अभिव्यंजना एक दुर्धटना का शिकार हो गई, जिनमें उनकी अकाल मृत्यु हो गई। उनकी तीन संतोनों में एक बेटी संवेदना टाटा स्टील में ट्रेड अप्रेंटिस में चयनित होकर नौकरी कर रही है। एक बेटा दीर्घायु दो साल मारूति उद्योग में नौकरी करने के बाद अब

ओ०एन०जी०सी० में है। जबकि दूसरा बेटा शाश्वत अभी मुंबई के लोधा ग्रुप में एसोसिएट जनरल मैनेजर के पद पर हैं।

शिक्षा

इनकी शिक्षा गाँव के मदरसे से उर्दू माध्यम से पढ़ाई शुरू हुई, वहाँ 2 वर्षों तक पढ़ने के बाद पास में मंजीर गाँव के मिडिल स्कूल में पहली कक्षा में नामांकन करवाया। प्रथम श्रेणी से उन्होंने सातवीं बोर्ड की परीक्षा पास की। आगे भी उन्होंने प्रथम क्षेणी से अन्य कक्षाएं पास की, 1972 ई० में पूरे विद्यालय में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम स्थान लाकर अपने विद्यालय और परिवार का नाम रौशन किया। अपने गाँव से आठ मील की दूरी पर मौजूद होम टाउन वारिसलीगंज के एस० एन० एस० कॉलेज में नामांकन करवाया और हमेशा साइकिल को आने–जाने का साथी बना लिए। 1976 ई० में आई०ए० करीम सिटी कॉलेज जमशेदपुर से करने के साथ ही नौकरी भी कर रहे थे। जनता कॉलेज से उन्होंने स्वतंत्र छात्र के रूप में 1980 ई० मे पी०एच०डी० में निबंधन भी कराया, लेकिन उनके शोध निर्देशक के द्वारा दिए गए विषय पर उन्हें रूचि नहीं तथा शोध निर्देशक के द्वारा उन्हें सहायता ना मिलने के कारण वे शोध पूरा नहीं कर पाए।

शोध विषय की प्रेरणा :

स्कूल के दिनों से मुझे पढ़ना काफी अच्छा लगता है, मैं पढ़ने में बहुत ज्यादा अच्छी नहीं रही लेकिन हिन्दी किताबे पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब मैं गांव के स्कूल में पढ़ाई करती थी तब मेरे दोस्त प्राइवेट स्कूल वाले थे, अंग्रेजी नही जानने के कारण मैं उनकी हिन्दी किताबों को पढ़ा करती थी। धीरे–धीरे आगे की पढ़ाई होती रही और मैं जैसे–जैसे कक्षा पास करती गई किताबों से दोस्ती गहरी होती गई। घर में मेरे पिताजी–माता जी, दादी हमेशा कहानी सुनाया करती थी। लोक कथा के साथ ही लोक गीतों को भी सुनाती

थी। मुझे पढ़ना और लिखना बहुत अच्छा लगता है यही कारण है कि मेरा झुकाव हिन्दी साहित्य की ओर हुआ।

स्नातक और स्नात्तकोत्तर की परीक्षा पास करने के बाद मैं अपनी इसी इच्छा को बढ़ाते हुए उपन्यास में पी० एच० डी करने के लिए प्रेरित हुई। मेरे शोध निर्देशक डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह ने इस शोध कार्य को करने के लिए मुझे मुख्य रूप प्रेरित किया है।

शोध कार्य का उद्देश्य

उपन्यास का उद्देश्य हमेशा मानव के यर्थाथ जीवन को प्रदार्शित करना है। मनुष्य के इर्द–गिर्द हो रहे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक घटनाओं को जीवत रूप देता है। समाज में हो रहे तमाम परिवर्तन को हम उपन्यासों के माध्यम से जान पाते हैं। व्यक्ति हर कार्य को किसी–न–किसी उद्देश्य से करता है बिना उद्देश्य के जीवन संभव नहीं हैं।

इसी प्रकार जयनंदन जी के उपन्यासों में शोध कार्य कर, उनके उपन्यास के माध्यम से हमारे समाज के विभिन्न वर्ग के संघर्षों से अवगत कराने का मैं प्रयास करूंगी। साथ ही जयनंदन जी के जीवन संघर्ष से भी हम अवगत होंगे।

1. हमारे समाज के उस पहलू को जानेगें जिसे हम देखकर भी अनदेखा करते हैं।
2. मजदूर वर्ग के संघर्ष से परिचित होने का मौका मिलेगा।
3. जाति और समाज के बीच पीसते लोगों के दर्द को जानेगें।
4. प्रभावी व सफल लेखनी द्वारा पूरे समाज को जागरूकता और नैतिकता की ओर अग्रसर करेगें।

शोध का परिकल्पना

जयनंदन का रचनाकाल चालीस से अधिक वर्षों का होने आया है। आज भी वे लगातार लिख रहे हैं। इतने बड़े कालखंड में अपने जीवन की अनुभूतियों

को समेटकर पुनः बिखेरना सदैव एक समान नहीं रह सकता। उन्होंने अपने जीवन में एक सामान्य कृषक, कारखाने के मजदूर से लेकर प्रतिष्ठित साहित्यकार बनने तक का सफर तय किया। जिस प्रकार जीवन में उतार चढ़ाव आए वैसा ही प्रभाव हमें उनके उपन्यासों में देखने को मिलेगा। प्रस्तावित शोध **'जयनंदन के उपन्यासः सामाजिक जीवन के विविध रंग'** द्वारा जयनंदन के समकालीन समाज की विभिन्न परिस्थितियों एवं उसका लोगों पर उसका प्रभाव को सामने लाया जा सकेगा।

जयनंदन का उपन्यास लेखन का काल तीस से अधिक वर्षों से निरंतर चला आ रहा है। इतने समय के सफर में समाज में, आर्थिक, सामाजिक अन्य कई बदलाव हुए। इन परिवर्तनों का कुछ न कुछ कारण रहा साथ ही इनका प्रभाव लेखनी पर भी पड़ा। शोध के माध्यम से यह प्रयास किया जाएगा कि कथाकार की परिस्थितियों में बदलाव होने के साथ ही हम कैसे समाज में बदलाव का प्रयास कर पाएगें।

शोध का अभिप्राय

शोध के माध्यम से हम नवीन चीजों की खोज करते हैं। जयनंदन के उपन्यासों के द्वारा मैंने समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार करना चाहा है। हमारे समाज के हर वर्ग में व्याप्त घटनाओं के माध्यम से हर वर्ग को सामने लाने का प्रयास किया है। जयनंदन के लोहा छीलने से लेखनी तक का सफर को जानेगें। प्रेमचंद युग में जिस प्रकार हमें वर्ग संघर्ष, भेदभाव, शोषण देखने को मिलता हैं, उस समय भी हमारा समाज कहीं न कहीं शोषक का उद्धार और शोषित को दबाने का कार्य करती थी वह आज भी हमारे समाज में व्याप्त है। हम जयनंदन के उपन्यासों में कारखानों में काम करने वाले मजदूर वर्ग के संघर्षों से परिचित होते हैं। उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग की स्त्रियों को प्रताड़ित किया जाता है, उच्च वर्ग के कितने भी गलत कार्य कर लें उन्हें सजा

दिला पाना आसान नहीं होता। शोध के माध्यम से मैंने उन शोषित वर्गों के दुःख को समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया है।

शोध कार्य का महत्व :

कुदाल से कलम तक का सफर उनका बहुत दुःखदायी रहा। कुदाल चलाने वाले हाथों में समय के साथ रिंच और वर्नियर आ गया लेकिन परिस्थितियों में ज्यादा बदलाव नहीं आया। जहाँ खेत में पहले वो हल से धरती का सीना चीरते थे, वहीं कारखाने में आकर टूल से लोहा छीलने लगे। कारखाना में काम के दौरान ही उन्होंने लिखना प्रारंभ किया। कोई भी उपन्यासकार संपूर्णतः कल्पना पर कुछ नहीं लिख सकता। व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं से प्रभावित होकर उन्हें शब्दों में बांधता है। उपन्यासकार और उनके सहकर्मियों के साथ भी कई घटनाएं घटित हुई। उपन्यासकार अपने आस–आप की घटनाओं को आधार बनाकर लेखनी करते हैं और उस घटना में वो भी कहीं न कहीं मौजूद होते हैं। जीवन में अनेक रंगो से सामना होता है, इस प्रकार देखा जाए तो उपन्यास सृजन में विविध रंग आ ही जाते हैं।

जयनंदन ऐसे ही कथाकार हैं जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्र से लेकर शहरी क्षेत्र की पृष्ठभूमि तक पर्याप्त साहित्य लेखन किया है। इतनी विविध रंग कथा सामग्री में निश्चित रूप से समाज के विभिन्न स्तरों पर पल रहे लोगों की पीड़ा, दुःख–दर्द, प्रेम, हास्य, विवशता इत्यादि के भाव भी विविधतापूर्ण पृष्ठभूमि में उपस्थित हुए होगे, जिनको प्रकट करना आसान नहीं होता। समकालीन हिन्दी कथाकार जयनंदन अपने उपन्यास में विभिन्न परिस्थितियों का विस्तृत अवलोकन करते हुए समाज के विविध रंग को प्रस्तुत किए हैं।

साहित्य का पुनर्वलोकन :

प्रेमचंद युग में जहाँ हम उनके उपन्यासों में निम्न वर्ग के संघर्ष से परिचित होते हैं, साथ ही उच्च वर्ग के द्वारा शोषण से। यह शोषण सिर्फ मानसिक ही नहीं बल्कि शारीरिक रूप से भी किया जाता रहा। किसानों की

व्यथा से अनभिज्ञ कोई भी समाज नहीं रहा है। गोदान में जहाँ हम किसान ऋण, बाल विवाह, प्रेम विवाह, अंतरजातीय विवाह, विधवा विवाह, साथी ही मन के संघर्षों से परिचित होते हैं। एक किसान किस तरह गाय की आकांक्षा के साथ ही मृत्यु प्राप्त करता है, मरणोपरांत यह इच्छा गोदान के द्वारा पूरी की जाती है।

फणीश्वर नाथ रेणु की आंचलिक उपन्यास जिस प्रकार प्रसिद्धि पाई और अपनी उपन्यास साहित्य जगत में पहचान बनाई। जयनंदन के उपन्यास आंचलिक है जिसमें रज्जाकगंज की घटनाओं को जानेगें। वर्ग संघर्ष, बाल विवाह, शिक्षा सम्बंधी समस्याएं, उच्च वर्ग के द्वारा शोषण, ऋण की समस्या, शारीरिक शोषण, शादी के बाद अन्य व्यक्ति से सम्बंध, मजदूर वर्ग इन सभी पर विचार किया गया है। देखा जाए तो यह सारी समस्याएं कल भी हमारे समाज में व्याप्त थी और आज भी है। इसका रूप में अंतर आया है लेकिन समस्याएं ज्यों कि त्यों बनी है।

हम जयनंदन के उपन्यासों में मजदूर वर्ग के संघर्ष, स्त्री पर हो रहे शोषण, किसानों की व्यथा को सामने से देखते हैं उसी प्रकार उनके समकालीन लेखक रणेन्द्र के उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' में स्त्रियों का शोषण, किसानों का दुःख, जमीन–जयदाद से जुड़ी तकलीफों को देखते हैं। उसी प्रकार संजीव के उपन्यास में भी हमें मेहनतकश मजदूर वर्ग, स्त्री शोषण, पिछड़े तथा शोषित वर्ग का चित्रण किया गया है।

जयनंदन की रचनाओं पर पूर्व अध्ययन एवं शोध कार्य :

1. 'जयनंदन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

   शोधार्थी – गोपाल प्रसाद, मगध विश्वविद्यालय, गया, बिहार।

2. 'जयनंदन की कहानियों में जीवन मूल्य'

   शोधार्थी – बरतु राम ध्रुव, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रामपुर, छत्तीसगढ़।

3. ‘कथाकार जयनंदन का कथा वैशिष्ट्य’

शोधार्थी – आशुतोष कुमार झा, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

4. ‘जयनंदन का कथा साहित्य : सृजन और शिल्प (कुछ विशिष्ट कथाकारों के संदर्भ में)

शोधार्थी–ममता कुमारी, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

5. ‘जयनंदन का कथा साहित्य : समग्र मूल्यांकन’

शोधार्थी – कुञ्ज बिहारी विश्वकर्मा ‘अमृतांशु’, राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश।

6. ‘जयनंदन की कहानियों में संवेदना का अनुशीलन’

शोधार्थी – डी०ए० डाबरी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र।

7. ‘जयनंदन के कथा साहित्य में सामाजिक जीवन का अनुशीलन’

शोधार्थी – हरेन्द्र पंडित, राँची विश्वविद्यालय राँची।

<u>शोध प्रविधि :</u>

अधोलिखित शोध रूप रेखा के अनुसार मैंने इस शोध प्रारूप को तैयार करने के लिए जयनंदन के द्वारा रचित उनके उपन्यास, नाटक, कहानी, प्रकाशित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकलयों की सहायता ली है। भविष्य में भी इनका उपयोग किया जाएगा। किन्तु मेरे शोध का आधार उनकी औपन्यासिक कृति रहेगी। शोध प्रबंध में मुख्य रूप से साहित्यिक शोध की समाजशास्त्रीय एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

<u>शोध प्रारूप :</u>

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तावित शोध कार्य को अधोलिखित प्रारूप के अनुसार प्रस्तुत करने की योजना है–

प्रस्तावना :

(क) शोध विषय का परिचय और महत्व

(ख) शोध प्रक्रिया का वैशिष्ट्य

(ग) शोध का उद्देश्य

प्रथम अध्याय :

जयनंदन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(क) जयनंदन का जीवन परिचय

(ख) जयनंदन का उपन्यास काल

(ग) जयनंदन का सामाजिक राजनीतिक परिवेश

(घ) ग्रामीण तथा शहरी उपन्यास

(ङ) दृष्टिकोण

द्वितीय अध्याय :

जयनंदन की वैचारिकी और सामाजिक चेतना

(क) समाज चित्रण के विविध आयाम

(ख) अधिकारी वर्ग

(ग) मजदूर वर्ग

(घ) रंगकर्मी वर्ग

(ङ) समाज के विभिन्न वर्ग उनके रीति–रिवाज

(च) जाति और समाज का चित्रण विभिन्न वर्ग

(छ) जयंनदन की सामाजिक चेतना

(ज) दृष्टिकोण

तृतीय अध्याय :

जयनंदन के उपन्यासों का कथावस्तु

(क) कथावस्तु

(ख) कथावस्तु का क्षेत्र

(ग) कथा सृजन : कल्पना और यर्थाथ का चित्रण

(घ) समाज चित्रण : की बुनावट विविध वर्ग और समुदाय

(ङ) कथा की बुनावट : चरित्रों का संघर्ष

(च) परिवर्तन कामी समाज : निर्माण में चरित्रों के संघर्ष

(छ) दृष्टिकोण

<u>चतुर्थ अध्याय :</u>

<u>जयनंदन के उपन्यास में वस्तु विन्यास</u>

(क) वस्तु क्षेत्र : चुनाव

(ख) वस्तु विन्यास

(ग) वस्तु : सम्प्रेष्य

(घ) वस्तु : चरित्र निर्माण

(ङ) वस्तु चित्रण की पद्धति

(च) वस्तु सामाजिक जीवन के विविध आयाम

(छ) उपन्यास निर्माण में वस्तु चित्रण की भूमिका

(ज) दृष्टिकोण

<u>पंचम अध्याय :</u>

<u>जयनंदन के उपन्यास में संवाद योजना</u>

(क) वस्तु विकास में संवाद का महत्व

(ख) चरित्र और संवाद

(ग) चरित्र निर्माण में संवाद की भूमिका

(घ) चरित्र विकास संवाद की भूमिका

(ङ) संवाद कथावस्तु की प्रेरकता में भूमिका

(च) दृष्टिकोण

<u>षष्ठ्म अध्याय :</u>

<u>जयनंदन के उपन्यास और देशकाल का निर्माण</u>

(क) देशकाल निर्माण : आचार–विचार

(ख) देशकाल निर्माण : रीति–रिवाज

(ग) जीवन स्थिति : देशकाल निर्माण

(घ) देशकाल के निर्माण में समाज चित्रण की भूमिका

(ङ) देशकाल : परिस्थितियां

(च) दृष्टिकोण

सप्तम् अध्याय :

जयनंदन के उपन्यासों का उद्देश्य और दृष्टिकोण

(क) भाव और विचार पारस्परिक संबंध

(ख) उद्देश्य पुरूषों और स्त्रियों के विचार : पारस्परिक सम्बंध

(ग) उद्देश्य : मनोविकार

(घ) उद्देश्य और सिद्धातों का प्रतिपादन

(ङ) उद्देश्य नैतिकता और जीवन

(च) उद्देश्य का रचनात्मक महत्व

(छ) दृष्टिकोण

अष्ठम अध्याय :

जयनंदन के उपन्यासों की भाषा

(क) घटना प्रधान या सामाजिक

(ख) कथानिर्माण

(ग) वस्तुचित्रण

(घ) संवाद

(ङ) देशकाल

(च) उद्देश्य

(छ) दृष्टिकोण

आधार ग्रंथ सूची :
जयनंदन के प्रसिद्ध उपन्यास

1. चिमनियों से लहू की गंध (श्रम एवं जयते) सन् 1991 ई०, प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 702, जे/50, एवेन्यू–जे, ग्लोबल सिटी, विरार (वेस्ट), ठाबो, महाराष्ट्र–401303
2. सल्तनत को सुनों गाँव वालो सन् 2005, वाणी प्रकाशन, 21 ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110002
3. चौधराहट (ऐसी नगरिया में केहि विधि रहना) सन् 1994, सामयिक प्रकाशन, 3320–21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली–110002
4. रंगप्रहरी 2013 ई०, जे 50, ग्लोबल सिटी, विरार (वेस्ट), मुम्बई, महाराष्ट्र–401303
5. विघटन 2017 ई०, 'राधा कृष्ण पुरस्कार' से सम्मानित, राजपाल एण्ड सन्ज 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006
6. मिल्कियत की बागडोर 2019 ई०, अमन प्रकाशन, 104–A/80–C, रामबाग, कानपुर–208012 (उ०प्र०)
7. रहमतों की बारिश 2020 ई०, सामायिक प्रकाशन 3320–21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली–110002

शोध कार्य अध्ययन पद्धति :

1. पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन
2. पुस्तकालय अवलोन
3. इंटरनेट से उपलब्ध सामग्री का उपयोग
4. साक्षात्कार

सहायक ग्रंथ सूची :

1. रणेंद्र, ग्लोबल गाँव के देवता, भारतीय ज्ञानपीठ वाणी प्रकाशन
2. संजीव, किशनगढ़ के अहेरी, मीनाक्षी पुस्तक मंदिर, 1981
3. संजीव, जंगल जहाँ शुरू होता है, राधाकृष्ण प्रकाशन 2019
4. संजीव, पाँव तले की दूब, प्रवीण प्रकाशन, 1995
5. श्रवण कुमार गोस्वामी, जंगल तंत्रम, राजकमल प्रकाशन, 2017

पत्र–पत्रिकाएँ

1.	झारखण्ड	मासिक पत्रिका	गुमला
2.	अबुआ झारखण्ड	साप्ताहिक पत्रिका	राँची
3.	हिन्दुस्तान	दैनिक समाचार पत्र	राँची
4.	आदिवासी सकम	साप्ताहिक पत्रिका	जमशेदपुर
5.	प्रभात खबर	दैनिक समाचार पत्र	राँची
6.	आदिवासी	साप्ताहिकपत्रिका	राँची

उपसंहार :

अंत में उपसंहार है। उपसंहार में मैं अपने शोध के निष्कर्ष प्रस्तुत करूँगी। इसके साथ ही जयनंदन से साक्षात्कार लिया जाएगा जो परिशिष्ट में जोड़ा जाएगा।

धन्यवाद !

शोध निर्देशक :

डॉ० जितेंन्द्र कुमार सिंह
(सहायक प्राध्यापक)
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, राँची
विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

शोधार्थी :

सालो कुमारी उराँव
यू०जी०सी० नेट
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी
विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

नोट :– शोध प्रारूप में आवश्यकता पड़ने पर शोध निर्देशक के आदेशानुसार संशोधन व परिवर्तन किए जा सकते हैं।